बाइबिल यह सिखाती है कि हर चीज का अपना उचित समय और ऋतु होती है। सभोपदेशक 3:1 कहती है:

“हर एक बात
का एक अवसर और प्रत्येक काम का, जो आकाश के नीचे होता है, एक समय है।”
इसका मतलब यह है कि भले आप किसी चीज़ की तीव्रता से इच्छा
करें — लेकिन जब तक वह ईश्वर द्वारा निर्धारित सही समय न
हो, तब तक वह पूरी नहीं होगी।
उदाहरण के लिए: चाहे आप आम के पेड़ को कितना ही पानी या खाद दें — अगर फल आने का मौसम नहीं है, तो फल नहीं आएंगे। लेकिन
जब उस पेड़ का समय आ जाता है, तो स्वाभाविक रूप से फल लगने
लगते हैं। क्यों? क्योंकि समय मायने रखता है, यहाँ तक कि आध्यात्मिक बातों में भी।

अनुग्रह का मौसम

भौतिक ऋतुओं की तरह, आध्यात्मिक आशीषें भी ईश्वर‑निर्धारित ऋतुओं में ही आती हैं। और इनमें से एक है — उद्धार का अनुग्रह। बहुत लोग यह सोचते हैं कि उद्धार का अनुग्रह हमेशा उपलब्ध है और कभी नहीं बदलेगा। लेकिन शास्त्र स्पष्ट करता है कि यह अनुग्रह एक विशेष समय के दौरान दिया जाता है — जब वह स्वीकार्य समय कहला

सकता है — और उस समय के बाद यह उसी रूप से नहीं मिल पाता। यीशु के आने से पहले, पापों की पूरी क्षमा नहीं मिलती थी; बलिदानों द्वारा पाप ढँके जाते थे, पर पूरी तरह से मिटते नहीं थे।
इब्रानियों 10:1‑4 में लिखा है:

“क्योंकि व्यवस्था आने वाली भली बातों की छाया मात्र है… उसी तरह बलिदानों द्वारा… पास आने वालों को सिद्ध नहीं कर सकती। … क्योंकि बैलों और बकरों का लोहू पापों को दूर करना असंभव है।”
यह दर्शाता है कि उन पुराने नियमों में अनुग्रह‑युग नहीं था जैसा कि अब है। मूसा, दाऊद, एलिय्याह जैसे महान लोग भी उस अनुग्रह‑युग में नहीं थे — इसलिए उन्होंने अनुग्रह का
अनुभव नहीं किया जैसा हमें अब मिलता है।

नया मौसम आरंभ हुआ

जब यीशु आए — येशु मसीह — सब कुछ बदल गया।
यूहन्ना 1:17 कहता है:

“व्यवस्था

तो मूसा के माध्यम से दी गई; परंतु अनुग्रह और सत्य येशु मसीह के माध्यम से आया।”
यह बताता है कि अनुग्रह का नया मौसम शुरू हुआ — एक ऐसा समय जब ईश्वर का अनुग्रह विश्वास करने वालों के लिए खुल गया। जब यीशु ने यशायाह की पुस्तक पढ़ी और स्वयं को उस भविष्यवाणी में पहचाना:
लूका 4:18‑19:
“प्रभु की आत्मा मुझ पर है… क्योंकि उसने मुझे अभिषीकृत किया है कि मैं गरीबों को सुसमाचार सुनाऊँ… प्रभु के स्वीकार्य वर्ष का प्रचार करूँ।”
यह “प्रभु के स्वीकार्य वर्ष” उस नियत समय‑फ्रेम को इंगित करता है जब ईश्वर की कृपा विशेष रूप से व्यक्त की जाती है।

अब वही समय है

पॉलुस ने इसे स्पष्ट कहा:
2 कुरिन्थियों 6:1‑2 में:

“हम जो उसके सहकर्मी हैं यह भी समझाते हैं कि परमेश्वर का अनुग्रह, जो तुम पर हुआ है, उसे व्यर्थ न रहने दो। क्योंकि वह कहता है — ‘अपनी प्रसन्नता के समय मैं ने तेरी सुन ली, और उद्धार के दिन मैं ने तेरी सहायता की।’ देखो, अभी वह स्वीकार्य समय है; देखो, अभी उद्धार का दिन है।”

इसका मतलब है — हम वर्तमान में उस मौसम में हैं जब ईश्वर का अनुग्रह तैयार है, और उद्धार प्राप्त किया जा सकता है।
लेकिन जैसे सभी ऋतुओं का अंत होता है, यही समय भी अनिश्चित
है — यह शाश्वत नहीं है।

बंद होता अवसर

आज जो अनुग्रह हम अनुभव कर रहे हैं — वह हमेशा के लिए नहीं रहेगा। जब मसीह अपनी कलीसिया को लेने आएँगे (जिसे “उत्थान” कहा जाता है), तब वह समय समाप्त हो जाएगा। फिर किसी प्रार्थना, उपवास या याचना से उद्धार नहीं मिलेगा क्योंकि स्वीकार्य समय बीत चुका होगा।
मत्ती 25:10‑13 की दृष्टांत में — बुद्धिमान और मूर्ख कुँवारियों – यीशु चेतावनी देते हैं कि जब द्वार बंद हो जाएगा, तब बहुत देर हो चुकी होगी:

“…दूल्हा आया, और जो तैयार थीं वे उसके साथ विवाह में चली
गईं, और द्वार बंद कर दिया गया… इसलिए सतर्क रहो, क्योंकि
तुम न दिन जानते हो, न घड़ी।”

अब क्या करें?

जब तक अनुग्रह उपलब्ध है — उसे पकड़ लो। प्राचीन भविष्यद्वक्ताओं ने इस दिन को देखने की लालसा की थी। येशु ने कहा:
मत्ती 13:17

“मैं तुमसे सच कहता हूँ कि बहुत से भविष्यद्वक्ताओं और
धर्मी लोगों ने वह देखने की चाही जो तुम देख रहे हो, पर नहीं देख सके…”
तो यह अनुग्रह कैसे प्राप्त करें?
प्रेरितों के काम 2:38 में मार्ग है:
“मन फिराओ, और तुम में से हर एक अपने पापों की क्षमा के लिए यीशु मसीह के नाम पर बपतिस्मा ले; और तुम पवित्र आत्मा का वरदान पाओगे।”
तो कदम ये हैं:

यीशु मसीह पर विश्वास करें – उन्हें अपना प्रभु और उद्धारकर्ता मानें। अपने पापों से मन मोड़ें – सच्चे अर्थ में पश्चाताप करें।
उनके नाम पर बपतिस्मा लें।
उनका आज्ञाकारी जीवन जीएँ।
इसी तरह आप ईश्वर के अनुग्रह में प्रवेश करते हैं, और उन लोगों में गिने जाते हैं जो मसीह के आगमन के लिए तैयार हैं।

प्रभु आने वाले हैं!

इसलिए आज — जब समय अभी है — अनुग्रह को व्यर्थ न जाने दें। यह नियत समय है — उद्धार का दिन।

JIUNGE NA GROUP LETU LA WHATSAPP HAPA >> WHATSAPP GROUP….

Share on:
WhatsApp